शोध मंथन Vol. XVI No.2 Apr.- June. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.877 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.43

नगरीय एवं ग्रामीण मुस्लिम महिलाओं पर आधुनिकीकरण और परम्परा का प्रभाव एक तुलनात्मक अध्ययन (जनपद–बदायूँ के विशेष सन्दर्भ में)

प्राप्तिः 15.04.2025
स्वीकृतः 20.05.2025

43

परवीन बॉबी
शोधछात्रा (समाजशास्त्र विभाग)
के.जी.के. (पी0जी0) कॉलेज, मुरादाबाद
महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड
विश्वविद्यालय, बरेली
ईमेलः pervinboby500@gmail.com

प्रो0 ममता रानी
शोध निर्देशिका
के.जी.के. (पी0जी0) कॉलेज,
मुरादाबाद

सारांश

प्रायः आधुनिकीकरण एवं परम्परा को समाज में एक दूसरे के विरोधी के रूप में देखा जाता है। वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों के विश्लेषण में आधुनिकीकरण का प्रयोग अक्सर परम्परा की विरोधी प्रक्रिया के रूप में किया जाता है। समाज का उद्विकास, प्रगति एवम् परिवर्तन सदैव परम्परा से आधुनिकीकरण की ओर ही होता है। परम्परागत समाज न तो पूर्ण रूप से परम्परागत है और न ही आधुनिक समाज पूर्णतयः परम्परागत मुक्त। इस प्रकार परम्परा भूत एवं वर्तमान के बीच एक कड़ी का कार्य करती है। परम्परा एवं आधुनिकता को हम कभी भी संख्यात्मक दर्षष्टि से सही–सही नहीं माप सकते हैं। इन दोनों शब्दों के भीतर गुणात्मक तथा आत्मपरक्ता का भाव छिपा रहता है। प्रत्येक समाज आधुनिकीकरण को अपने–अपने ढंग से लेता है अतः परिवर्तनों के स्वरूपों में स्वाभाविक रूप से भिन्नताएँ पायी जाती हैं। वर्तमान समय में आधुनिकीकरण का प्रभाव नगरीय क्षेत्रों से लेकर पारम्परिक ग्रामीण समाज तक स्पष्ट रूप से अवलोकित हो रहा है। आध ुनिकीकरण ने प्रत्येक धर्म व समाज की महिलाओं को अत्यधिक प्रभावित किया है। इस प्रभाव से मुस्लिम महिलाएँ भी अछूती नहीं रही उन्होंने भी अपनी परम्पराओं का पालन करते हुए भी आधुनिकीकरण के साधनों को अपनाया है। आधुनिकीकरण द्वारा मुस्लिम महिलाएँ शिक्षा, राजनीति, व्यवसाय नौकरी आदि क्षेत्रों में आगे बढ़ रही हैं। इससे उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति पूर्व की तुलना में वर्तमान समय में अधिक सशक्त हुई है। मुस्लिम महिलाएँ अपने धार्मिक समाज के बन्धनों में बंध कर भी आधुनिकीकरण के माध्यम से अपने जीवन में आने वाली समस्याओं को कम करने में सफल हो रही है। जन संचार माध्यम, मोबाइल, सोशल, मीडिया, यातायात के साधनों ने शिक्षा, रोजगार आदि के अवसर प्रदान

किए हैं। आधुनिकीकरण ने नगरीय एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों को प्रभावित किया है। आधुनिकीकरण द्वारा जो भारतीय समाज में से परिवर्तन आये उसका प्रभाव नगरों से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों तक दिखाई देता है। इस परिवर्तन की लहर ने भारतीय समाज के साथ पूरे विश्व को प्रभावित किया है। आज हर भारतीय नागरिक आत्मा से पारम्परिक होते हुए भी स्वयं को बाहर से आधुनिक दिखाने का प्रयास कर रहा है। वह भी पूरे विश्व के साथ आधुनिकीकरण की धारा में सबके समान बहना–चाहता है। आधुनिकीकरण द्वारा जो समाज में जो परितर्वन आये उनका सबसे अधिक प्रभाव महिलाओं पर पड़ा, उनकी स्थिति में आमूलचूल परिवर्तन आये। आज महिलाएँ समाज के प्रत्येक क्षेत्र में निरन्तर नये–नये कीर्तिमान रच रही है

अब महिलाएँ घर की चारदिवारी में कैद न रहकर समाज में सम्मान और स्वयं की उपस्थिति को दर्ज कराना चाहती हैं। परम्पराओं को निभाने में भी महिलाएँ सदैव अग्रणी रही हैं। महिलाओं ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ कर अपनी प्रतिभा को दर्शाया है। नगरीय महिलाओं के साथ ग्रामीण महिलाएँ भी अब पहले की भाँति केवल परम्पराओं का पालन ही नहीं करती बल्कि आधुनिक साधनों और शिक्षा द्वारा स्वयं की जीवन शैली में सुधार कर अपनी सामाजिक स्थिति को सुदृढ़ करने का प्रयत्न कर रही हैं।

मुख्य बिन्दु

आधुनिकीकरण, परम्पराएँ, मुस्लिम महिलाएँ, परिवर्तन, नगरीय व ग्रामीण क्षेत्र।

प्रस्तावना

भारतीय परम्पराओं का सम्पूर्ण विश्व में अहम स्थान है। भारतीय परम्पराएँ विश्वविख्यात हैं। अपनी परम्पराओं के कारण ही आज भी भारतीय समाज जीवन्त है। जबकि विश्व की कई अन्य प्राचीन समाज की परम्पराएँ पतन के अंधकारमय गर्त में समा चुकी हैं। भारतीय परम्पराएँ मानव समाज की अमूल्य धरोहर हैं। भारतीय परम्पराओं की विभिन्न विशेषताएँ हैं जैसे – जीवन चक्र संस्तरण, परलोकवाद, पवित्र अपवित्र की धारणा, कर्म में विश्वास, पुर्नजन्म में विश्वास, धर्म अहिंसा, देवो भवः, पितष्सत्तात्मकता, अध्यात्मवाद, नैतिकता, सम्मान, सत्कार, विश्वास आदि। भारतीय पारम्परिक समाज में अभौतिक पक्ष को ही परम्परा के नाम से जाना जाता है। विश्व में ऐसा कोई भी समाज नही है जो परम्पराओं से मुक्त हो। सभी धर्मों में अपनी – अपनी भिन्न–भिन्न परम्पराएँ पायी जाती हैं और सभी व्यक्तियों को अपनी परम्पराओं पर गर्व होता है। परम्परविहीन मानव समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। प्रो0 योगेन्द्र सिंह ने परम्परा को अत्यधिक व्यापक सन्दर्भ में परिभाषित किया है, ''परम्परा किसी समाज की वह संचयी विरासत है जो सामाजिक संगठन के सभी स्तरों जैसे– मूल्य व्यवस्था, सामाजिक संरचना तथा व्यक्तित्व संरचना में व्याप्त होती है।'' वर्तमान समय में जितनी भी वस्तुएँ है उनका कोई न कोई इतिहास अवश्य रहा है भारतीय परम्परागत समाज में आधुनिकीकरण का प्रवेश प्रमुख रूप से ब्रिटिश शासन के अर्न्तगत पश्चिमी सम्पर्क के परिणाम स्वरूप हुआ है। ऐतिहासिक रूप से आधुनिकीकरण एक प्रकार की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्थाओं की ओर परितर्वन की एक प्रक्रिया है। जो 17 वीं से 19वीं शताब्दी तक दक्षिण

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.43

अमेरिका एशियाई व अफ्रीकी देशों में विकसित हुई। आधुनिकीकरण की अवधारणा का प्रयोग एक I kFk cgqr I kjh iB̊fØ;kvkagsrsfd;k tkrk jgk g\$ tS&;jksih;dj.k] if'pehdj.k] uxjhdj.k] mn~fodkl] ixfr] fodkl vkfnA vk/kqfudhdj.k dh vo/kkj.kk dk I EcU/k oSKkfud eW;ka I s g\$;g fdl h I ekt ;k I ald`fr ds cnyko dks I seÖr g\$ vk/kqfudhdj.k ds cgqr I s vk;ke g\$ tS s O;fDr] I eng ,oa I akBu I ekt A ^^,e0,u0 Jhfuokl us vk/kqfudhdj.k dks ,d rVLFk "kCn ugha ekuk g\$ mUgksaus vk/kqfudhdj.k ds vUrxZr HkkSfrd I ald`fr] I keftd I aLFkkvksarFkk Kku] eW;ka ,oa eukofRr;ka dks bl esa I fEefyr fd;k g\$^^ vk/kqfudhdj.k us ykska ds jgu&I gu ds Lrj] thou "kSyh] f'k{kk] tkx:drk vkfn esa of) dh g\$ fjorZu dh ;g iØ;k fujUrj fØ;k'khy g\$ vk/kqfudhdj.k }kjk Hkkjrh; eqfLye I ekt Hkh ifjorZu I s i Hkkfor gq fcuk ugha jgkA Hkkjrh; eqfLye I ekt i kphu dky I s gh :f<+okfnh vkjS fir`I RrkRed I ekt jgk g\$ viuh I ald`fr vkjS ijEijkvksa I s I EcfU/kr dk;ksZ esa vxz.kh jgk g\$ eqfLye I ekt esa ;g /kkj.kk O;kIr g\$fd ogh O;fDr I Ppk eqlyeku gks I drk g\$ tks viuh /kkfeZd ijEijkvksa dk i w.kZ;% ikyu djrk gksA oLrqr% esa ijEijk;¡gh :f<+;k dk st Ue nsus esa I gk;d ekuh tkrh g\$ vkjS :f<;k¡gh fodkl esa ck/kk;¡ mRiUu djrh g\$ vkt vk/kqfudhdj.k ds ek/;e I s I EiwkZ fo"o esa ifjorZu gks jgs g\$ ijUrq eqfLye I ekt vkt Hkh "kjh;r ds nk;js esa jgdj gh nqfu;k dks ns[kuk pkgrk g\$

vk/kqfudhdj.k us O;fDr ds ikjEifjd vkjS I keftd thou dks vf/kd i Hkkfor fd;k g\$ eqfLye I ekt esa efgykvksa dh fLFkfr vf/kd n;uh; vkjS fpark tud g\$ eqfLye I ekt esa I cI s vf/kd cU/kuksa dk I keuk efgykvksa dks gh djuk iM+k g\$ bLyke }kjk efgykvksa dks tks vf/kdkj i Ir g\$ mu vf/kdkjksa I s oafpr dj efgykvksa dk "kks"k.k fd;k tkrk jgk g\$ dHkh rykd] cgqfookg ds uke ij rks dHkh inkZ ;k "kjh;r ds uke ijA bLyke ds iSxEcj gt jr egEen I kgc us vkjSrksa dks I ekt esa cjkcjh dk gd fnykus esa dksbZ dl j ugha NksM+h bl ds fy, os thou Hkj i z;kl jr jgsA M0 tfru "kkSr ds vuql kj] ^gt jr egEen I gkc I cI s igys Qsfefu'V FksA /keZ ds uke ij I cI s vf/kd "kks"k.k i R;sd /keZ esa efgykvksa dk gh gqvk g\$ bLyke us rks iq:'kksa vkjS efgykvksa dks cjkcj dk vf/kdkj fn;k ft ruh tehu mruk vkI eku fn;k ijUrq efgykvksa ds fgLI s dk ks Hkh I nS mI I s Nhuus dk iz;kl fd;k tkrk jgk g\$ ysfdu vk/kqfudhdj.k ,d k I k/ku fl) gqvkA ft I us efgykvksa ds I "kfDrdj.k esa vge Hkwfedk fuHkkbZ g\$ efgyk;¡ i woZ dh Hkkfr vcyk ugha cfYd I cyk ds :i esa I ekt esa Lo;a dks LFkkfir dj jgh g\$ uxjh; efgykvksa ds I kFk xzkeh.k efgyk;¡ Hkh vk/kqfud I k/kuksa ds ek/;e }kjk tkx:d gks jgh g\$ tu I apkj o ;krk;kr ds I k/kuksa us uxjh; {ks=ksa I s xzkeh.k {ks=ksa dh njwh de djus esa i Hkko"kkyh Hkwfedk inku dh g\$ vc xzkeh.k efgyk;¡ Hkh ?kj cSBs nqfu;k dh orZeku ?kVukvksa I s v|ru jgrh g\$ vk/kqfud I k/kuksa dks viuh fnup;kZ dh xfrfof/k;ksa ;k ?kjsyw dk;ksZ esa mi;ksx dj viuh thou "kSyh dks vf/kd I gy Hkh cukus esa I Qy gqbZ g\$ bl izdkj osLo;a ds fy, Hkh I e; fudky dj I ekt I sok ;k ukSdjh] O;ol k; vkfn }kjk dk;kZ dks djds I ekt esa rFkk viuk s ifjokj esa I g;ksx inku djus ;ksX; cu jgh g\$

साहित्यवलोकन

- जीनत अली शैकत (2014) के अनुसार मुस्लिम महिलाएँ अपनी धार्मिक परम्पराओं को निभाने के साथ–साथ आधुनिकीकरण को अपना रही हैं तथा शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने का प्रयास कर रही हैं।
- जोया हसन (2004) के अनुसार मुस्लिम महिलाओं की चिंताजनक व निम्न स्तर का मुख्य कारण धार्मिक नहीं बल्कि आर्थिक है। मुस्लिम महिलाओं की दयनीय स्थिति का सबसे बड़ा मुद्दा गरीबी है। मुस्लिम समाज में अधिकतर लोग गरीबी से जूझ रहे हैं।
- रूकय्या बेगम (1999) के अनुसार इस्लाम में महिलाओं को व्यवसाय करने की स्वतन्त्रता प्राप्त है परन्तु मुस्लिम समाज में केवल शिक्षित पति ही पत्नी को नौकरी करने की अनुमति देता है अधिकतर गरीब व अशिक्षित लोग धर्म का सहारा लेकर महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करने से रोकते हैं।

अध्ययन का क्षेत्र एवं प्रकृति :–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु उत्तर प्रदेश के जनपद बदायूँ के नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र की 392 मुस्लिम महिलाओं को उत्तरदाता के रूप में चुनाव किया गया है नगर से सात वार्ड तथा ग्रामीण क्षेत्र से सात गाँव की महिलाओं का चयन किया गया है। लघु शोध में वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। नगरीय एवं ग्रामीण मुस्लिम महिलाओं पर आधुनिकीकरण और परम्पराओं के प्रभाव का तुलनात्मक अध ययन कर निष्कर्ष प्राप्त किया गया है। समग्र का चयन सोउद्देश्य पूर्ण विधि द्वारा किया गया है। उत्तरदाता के रूप में 18 से 50 वर्ष तक कीं मुस्लिम महिलाओं का चयन किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. ग्रामीण और नगरीय मुस्लिम महिलाओं की स्वतन्त्रता प्राप्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. ग्रामीण और नगरीय मुस्लिम महिलाओं में पर्दा प्रथा के प्रति रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1. ग्रामीण और नगरीय मुस्लिम महिलाओं को समान रूप से स्वतन्त्रता प्राप्त करने में सार्थक अन्तर है।
2. ग्रामीण और नगरीय मुस्लिम महिलाओं में पर्दा प्रथा के प्रति रूचि में सार्थक अन्तर है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन की सुविधानुसार बदायूँ जनपद की कुल जनसंख्या में से सुविधानुसार न्यादर्श के रूप में केवल 392 मुस्लिम महिलाओं का चयन निदर्शन विधि द्वारा किया गया है। जिनसे आधुनिकीकरण और परम्पराओं के प्रभाव सम्बन्धी आँकड़ो को एकत्रित कर विश्लेषण किया गया है। आँकड़ो को एकत्रित करने में प्राथमिक स्रोतो का उपयोग किया गया जिसके अर्न्तगत साक्षात्कार अनुसूची तथा अवलोकन का प्रयोग कर शोध सम्बन्धी आवश्यक जानकारी प्राप्त की गई है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.43

सारणी संख्या – 1

उत्तरदाताओं का उनके पति द्वारा व्यवसाय या नौकरी करने की स्वतन्त्रता के प्रति प्रत्युत्तर

क्र0 सं0	उत्तरदाताओं का प्रत्युत्तर	ग्रामीण		नगरीय	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	66	33.67	117	59.70
2	नहीं	108	55.10	61	31.12
3	कोई उत्तर नहीं	22	11.23	18	9.18
4	योग	196	100.00	196	100.00

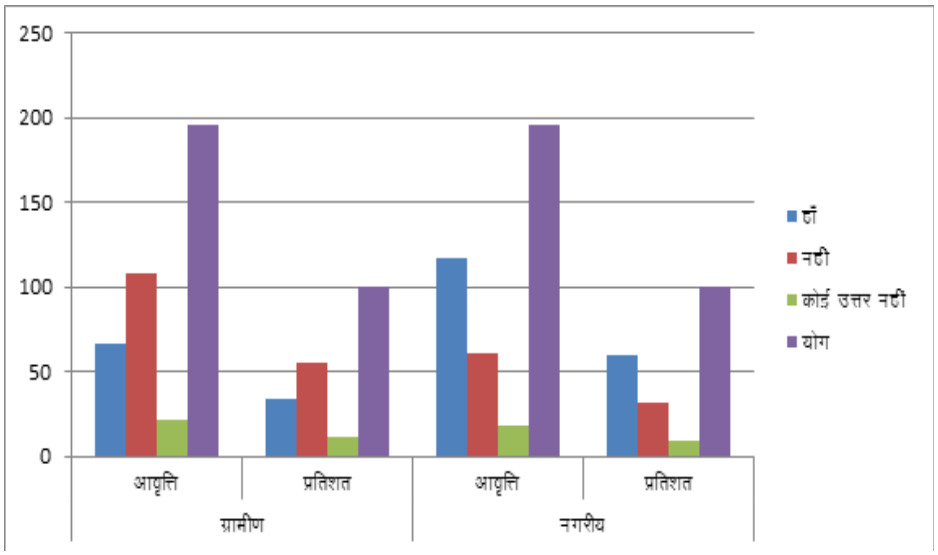

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अधिकतम रूप में 55.10 प्रतिशत ग्रामीण उत्तरदाताओं को उनके पति द्वारा घर से बाहर नौकरी या व्यवसाय करने को स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं है। केवल 33.67 प्रतिशत महिलाओं को ही अनुमति प्राप्त है जबकि 59.70 प्रतिशत नगरीय मुस्लिम महिलाओं को उनके पति या परिवार द्वारा घर से बाहर नौकरी करने की आजादी है लेकिन 31.12 प्रतिशत महिलाओं को उनके पति द्वारा अनुमति नहीं दी गई है। 9.18 प्रतिशत महिलाओं ने कोई उत्तर नहीं दिया।

उपरोक्त सारणी के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि ग्रामीण महिलाओं की तुलना में नगरीय महिलाएँ अधिक नौकरी कर रही है। उन्हें पति या परिवार द्वारा अधिक स्वतन्त्रता प्राप्त है ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी प्राचीन परम्पराएँ या मान्यताएँ अधिक प्रभावी हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी महिलाओं को घर में रहने, घरेलू कार्य करने आदि को ही अच्छा समझा जाता है। इस प्रकार उत्तरदाताओं के प्रत्युत्तर में सार्थक रूप से अन्तर पाया गया है।

सारणी – 2

उत्तरदाताओं का लड़को और लड़कियों को समान स्वतन्त्रता देने के प्रति प्रत्युत्तर

क्र0 सं0	स्वतन्त्रता देने के प्रति प्रत्युत्तर	ग्रामीण		नगरीय	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	पूर्णतः सहमत	18	09.18	41	20.91
2	सहमत	46	23.47	69	35.20
3	तटस्थ	33	16.84	31	15.82
4	असहमत	51	26.02	26	13.27
5	पूर्णतः असहमत	48	24.49	29	14.80
	योग	196	100.00	196	100.00

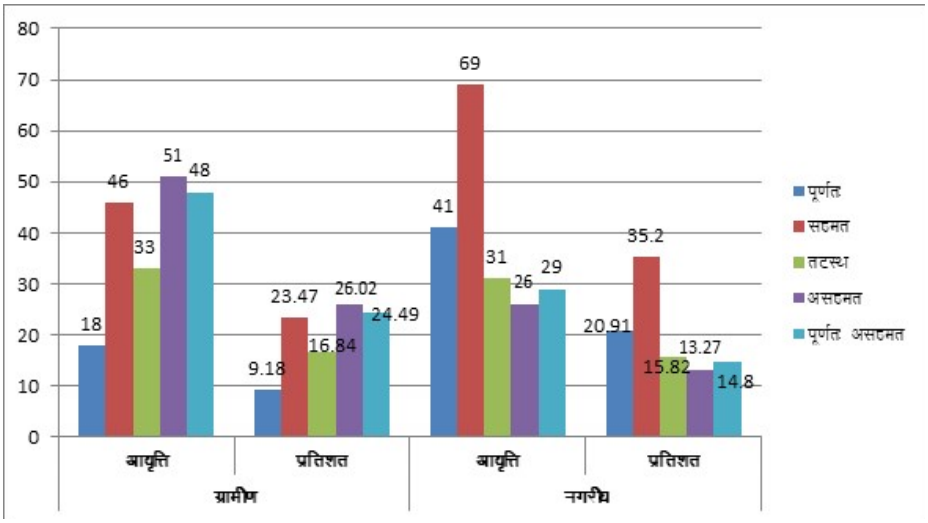

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि अधिकतम रूप से 26.02 प्रतिशत ग्रामीण उत्तरदाता लड़कियों को लड़को के समान स्वतन्त्रता देने के पक्ष में नहीं है। वे दोनों में अन्तर मानती है। जबकि 23.47 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएँ इसके पक्ष में है। अधिकतम रूप में 35.20 प्रतिशत नगरीय उत्तरदाताओं ने लड़कियों की स्वतन्त्रता के प्रति अपनी सहमति व्यक्त की है। निम्नतम रूप में 13.27 प्रतिशत ही नगरीय उत्तरदाताओं ने अपनी असहमति व्यक्त की है। जबकि 15.82 प्रतिशत नगरीय उत्तरदाता तटस्थ रहीं। इस प्रकार सारणी के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि वर्तमान समय में लड़के और लड़कियों में भेदभाव में कमी आयी है। परन्तु शिक्षा के अवसरो को छोड़कर अन्य मामलो में भेदभाव किया जाता है। ग्रामीण उत्तरदाता लड़कियों को अधिक स्वतन्त्रता देने के पक्ष में नहीं है परन्तु अधिकतम रूप से नगरीय उत्तरदाता 35.20 प्रतिशत जबकि 26.02 प्रतिशत ग्रामीण उत्तरदाता ही स्वतन्त्रता देने के पक्ष में है इस प्रकार ग्रामीण और नगरीय उत्तरदाताओं के इस कथन के प्रति प्रत्युत्तर में सार्थक अन्तर पाया गया है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.43

सारणी – 3

पर्दा प्रथा के प्रति उत्तरदाताओं की मनोवषति

क्र0 सं0	पर्दा करने की मनोवृति	ग्रामीण		नगरीय	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	पुरानी परम्परा निभाने के लिए	46	23.47	30	15.30
2	वृद्धजनों के सम्मान के लिए	34	17.35	29	14.80
3	मान–मार्यादा के लिए	52	26.53	48	24.49
4	दुर्वव्यहार से बचने के लिए	31	15.81	55	28.06
5	सुरक्षा के लिए	33	16.84	34	17.35
	योग	196	100.00	196	100.00

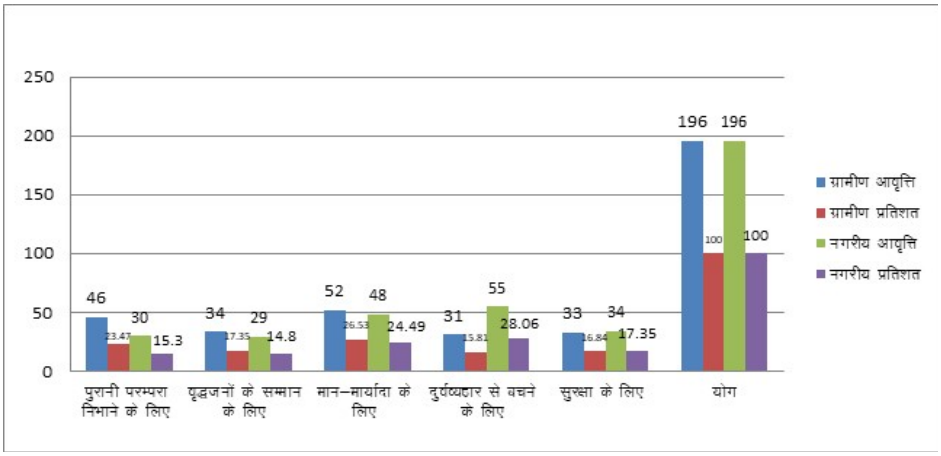

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि अधिकतम रूप से 26.53 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएँ उत्तरदाता समाज में अपने परिवार व स्वयं की मान–मर्यादा बनाए रखने हेतु पर्दा प्रथा का पालन करती हैं। 23.47 प्रतिशत ग्रामीण उत्तरदाता अपनी धार्मिक परम्परा का पालन करने के लिए पर्दे का उपयोग करती है। जबकि अधिकतम रूप से 28.06 प्रतिशत नगरीय महिला के उत्तरदाता पर्दे का उपयोग समाज में असमाजिक तत्वों के दुर्व्यवहार बचाव के साधन के रूप में करती है तथा अपने सौन्दर्य को बचाने के लिए भी पर्दे का प्रयोग करती हैं जैसे धूप, धूल, मिट्टी, प्रदूषण आदि। पर्दे में वे स्वयं को सुरक्षित महसूस करती है। जबकि 24.49 प्रतिशत नगरीय महिला उत्तरदाता पर्दे का उपयोग परिवार की मान–मर्यादा बनाए रखने के रूप में करती हैं। उपरोक्त सारणी के तुलनात्मक अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि पर्दे का उपयोग मुस्लिम महिलाएँ अपनी रूचि तथा आवश्यकतानुसार ही कर रही हैं। अधिकतम रूप से 26.53 प्रतिशत ग्रामीण उत्तरदाता पर्दे का प्रयोग मान–मर्यादा हेतु तथा 28.06 प्रतिशत नगरीय उत्तरदाता दुर्व्यवहार से बचाव हेतु कर रही है। नगरीय महिलाएँ पर्दे को एक बचाव के साधन के रूप में देखती है न कि बाध ाा के रूप में। इस प्रकार ग्रामीण एवं नगरीय उत्तरदाताओं की रूचि में सार्थक अन्तर प्राप्त होता है।

निष्कर्ष

शोध पत्र के अध्ययन के अर्न्तगत यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि मुस्लिम महिलाएँ चाहे वे नगरीय क्षेत्र की हों या ग्रामीण क्षेत्र की, अपनी परम्पराओं के पालन के साथ–साथ आधुनिकीकरण को भी अपना रही है। आज मुस्लिम महिलाएँ शिक्षा, नौकरी व्यवसाय आदि क्षेत्रों में आगे बढ़ रही है। मुस्लिम समाज द्वारा महिलाओं को सहयोग प्राप्त हो रहा है। शिक्षित वर्ग उनके अधिकारो को हनन न करके उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहन देने के पक्ष में दिखाई देता है। जिस कारण मुस्लिम महिलाओं की स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे है। शिक्षा, सिविल सेवा, डाक्टर, सेना आदि क्षेत्रों में नये कीर्तिमान रच रही हैं। पर्दे के लिए भी मुस्लिम समाज द्वारा महिलाओं को अब बाध्य नहीं किया जाता है। बल्कि महिलाएँ हिजाब या पर्दे का उपयोग अपनी सुविधानुसार ही कर रही है। परन्तु नगरीय क्षेत्र की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएँ अधिक पिछडी हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी परम्पराओं का प्रमुख रूप से पालन किया जाता है। आधुनिकीकरण से परम्पराओं को निभाने में उन्हें किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता है। बल्कि आधुनिकीकरण द्वारा विकास के नये अवसर प्राप्त हो रहे हों।

संदर्भ

1. जीनत अली शौकत, 2014, दा इम्पॉवरमेंट ऑफ वुमैन इन इस्लाम पब्लिर्सस विकल्स पफरेण्ड सिमोन्स लि0
2. जोया हसन, 2004, 'असमान नागरिक भारत में महिलाएँ' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी
3. रूकय्या बेगम, 1999 ''एजुकेशन एण्ड दा मुस्लिम वुमैन एण्ड इण्डियन मुस्लिम परसेप्टस एण्ड प्रेक्टिस'' न्यू दिल्ली
4. एम0एन0 श्री निवास, 1977, ''सोशल चेन्ज इन मॉर्डन इण्डिया, ओरिएन्ट ब्लैक स्वान ISBN 812500422x
5. जे0पी0 सिंह, 2019, 'आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन' रिमझिम हाउस लर्निंग प्रा0लि0 दिल्ली ISBN-978—81-203
6. योगेन्द्र सिंह, 2006, 'भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण, रावत पब्लिकेशन जयपुर
7. पारसनाथ राय 2016, 'अनुसंधान परिचय' लक्ष्मी नारायण अग्रवाल सोनल ग्राफिक्स आगरा।
8. मुहम्मद अय्यूब, 2008, 'मुस्लिम महिलाएँ और सामाजिक परिवर्तन रावत पब्लिकेशन जयपुर।
9. डा0 आलोक कुमार कश्यप, डा0 सुरेन्द्र पाल, 2012, 'मुस्लिम महिलाओं में शिक्षा' अर्जुन पब्लिसिंग हाउस नई दिल्ली ISBN 818304419
10. डा0 लता आर्या, 2020, 'मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति' अखण्ड पब्लिसिंग हाउस नई दिल्ली ISBN 9788194600664